ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-VI | Nov. | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य :सकालीन राजनीति के विविध आयाम

प्रकाश कांबळे

सहयोगी प्राध्यापक

(हिंदी विभाग)

महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर

व्यंग्य आधुनिक युग में विसंगतियों और विडंबनाओं के अनावरण का सबसे तीक्ष्ण, सशक्त और अचूक माध्यम रहा है। शरद जोशी ने अपने समय और समाज की सच्चाई तथा संवेदना को पकडने के लिए व्यंग्य को माध्यम बनाया है। उनकी व्यंग्य संबंधी धारणा स्पष्ट तथा निश्चित है। उनकी दृष्टि से व्यंग्य का अंतिम उद्देश्य बदलाव ही है। व्यंग्यकार अपनी आब्जेक्टिविटी के कारण व्यंग्यकार बनता है। व्यंग्यकार की भूमिका समाज मन के असंतोष को महसूस कर पाखंड और अन्याय के प्रति लोगों को जाग्रत करना तथा लडने की प्रेरणा प्रदान करना मानते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में जीवन के हर क्षेत्र पर राजनीति का प्रभाव रहा। वैसे तो आज समाज का हर क्षेत्र बीमार है पर राजनीति का क्षेत्र सर्वाधिक रोगग्रत है। इस क्षेत्र की विसंगतियों ने व्यंग्यकार को लेखन के हेतु प्रेरित किया। यहाँ तक की इस युग की राजनीति ने व्यंग्य विधा के पनपने तथा विकसित होने में उर्वर भूमि तैयार की। शरद जोशी का अधिकांश साहित्य आजादी के बाद के बदलते हुए परिदृश्य का इतिहास प्रस्तुत करता है। उनका समय भारतीय राजनीति के उथल–पुथल या विसंगतियों की यथार्थ अभिव्यक्ति या प्रतिक्रिया रहा है। वे स्पष्ट रूप से किसी राजनीतिक विचारधारा का समर्थन नहीं करते। "उनकी कोई एक निश्चित राजनीतिक विचारधारा नहीं थी, उनकी एकमात्र भूमिका थी – गलत के विरुद्ध विरोध की। उनके लेखन में सत्ता विरोध का आक्रोश झलकता है।"१ शरद जोशी राजनीति से परहेज नहीं करते। उनके लिए राजनीति से जुडना याने मानव जीवन को बेहतर बनाने की लडाई से जुडना है। वे राजनीति में मेहनतकश वर्ग का साथ देकर शासकों के खिलाफ खडे रहे हैं। चाहे कोई भी सरकार हो, उन्होंने विरोध की भूमिका निभाई है। शरद जोशी अपने समकालीन हरिशंकर परसाई के समान राजनीति को अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाते हैं। उनके साहित्य में अभिव्यक्त राजनीतिक व्यंग्य को समकालीन नेताओं के क्रिया–कलाप, राजनीतिक पक्ष, चुनाव का सच तथा आंतर्राष्ट्रीय राजनीति के रूप में देखा गया है।

शरद जोशी मानव जीवन को बेहतर बनाने की राजनीति में नेता के चरित्र को बडा महत्त्व देते हैं। संसद की गरिमा एवं संसदीय प्रजातंत्र की सफलता के लिए जन–प्रतिनिधियों की भूमिका एवं आचरण का बडा महत्त्व होता है। लेकिन वर्तमान नेता जब इसके विपरीत आचरण करता पाया जाता है तो वह व्यंग्य का 'नायक' बनकर उभरता है। सत्ता की लालच में 'कथनी और करनी में अंतर' रखनेवाला, भ्रष्ट, दलबदलू, गुंडागर्दी करनेवाला, झूठे वादें करना तथा जनता का शोषण करनेवाला जैसी चारित्रिक विशेषताओं का यह नायक शरद जोशी के साहित्य के केंद्र में है। उनके 'हर फूल दिल्ली मुखी', 'ख्यालीरामजी का दल बदलना', 'कुर्सियाँ छिनने का मौसम, अनशन और आश्वासन' जैसे निबंधों में भ्रष्ट राजनीति के पीछे के सबसे बडे कारण सत्तालोलुपता तथा कुर्सीवाद को आलंबन बनाया है। शरद जोशी को भारतीय समाज में भ्रष्टाचार मात्र व्यवहार न होकर एक स्वीकृत मनोवृत्ति तथा जीवनावश्यक गुण लगता है। इसी के परिणामस्वस्प वे अनुभव करते हैं कि "पालने में दूध पिता बच्चा सोचता है, आगे चलकर विधायक बनूँ या सिविल इंजीनियर, माल कहाँ ज्यादा कटेगा?"२ कभी राजनीति को 'समाजसेवा' से जोडकर देखा जाता था, आज मात्र वह सत्ता तथा पैसों की प्राप्ति का महज मार्ग बना नजर आता है। आज □भ्रष्ट होना मंत्री की निजी विशेषता बनी हई है। घोटालों की श्रृंखला को देखकर लगता है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास घोटालों का इतिहास है। क्योंकि "जहाँ–जहाँ जाती है सरकार, उसके नियम, कानून, मंत्री, अमला, कारिंदे । जहाँ–जहाँ जाती है सूरज की किरन वहीं–वहीं पनपता है भ्रष्टाचार का पौधा।"३ शरद जोशी भ्रष्टाचार के इस खेल में पक्ष–विपक्ष दोनों को देखते हैं। इसी कारण उन्हें भ्रष्टाचार पर विपक्ष दवारा किया गया हंगामा भ्रष्टाचार की सफलता में किया गया सामूहिक नृत्य लगता है।

वे वर्तमान राजनीति की खौफनाक सच्चाई को हमारे सामने रखते हैं। वर्तमान राजनीति में आत्मा की पवित्रता तथा चरित्र की नैतिकतावाला आदमी खतरनाक समझा जाने लगा है। आज राजनीति में अपराधीकरण बडी मात्रा में बढ गया है। आज नेता की गुंडागर्दी तथा गिरफ्तारी की क्षमता पर उसका टिकट तय किया जा रहा है। यहाँ शरद जोशी शिक्षित, ईमानदार तथा चारित्र्यवान आदमियों का राजनीति से टूटने तथा दूर रहणे के कारणों का विवेचन करते हैं। भारतीय राजनीति में दल बदलना तथा दल बदलने के लिए प्रवृत्त करना बहत बडी कला मानी गई है। इस जोड–तोड की कला में माहिर लोग पक्ष संगठन में महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन है। इस कारण सन १९६७ से आज तक भारतीय राजनीति ने कितनी सरकारों को गिरते तथा बनते देखा है। वे दलबदल के कारणों से भी हमें अवगत कराते हैं। उन्होंने नेता की प्रदर्शनप्रियता, ढोंग तथा बयानबाजी की आलोचना की है तथा अस्पृश्यों के घर की रुखी–सूखी रोटी खानेवाले नेता के स्वार्थ को सार्वजनिक किया है। नंगे–मैले बच्चे को उठाकर चुमनेवाले नेता को बच्चे की मुकुराहट में अपना भविष्य सुरक्षित नजर आता है, लेकिन व्यंग्यकार उसके इस ढोंग के पीछे की सच्चाई को सार्वजनिक करते हैं। उन्होंने नेता के लिए 'बगुले' की उपमा दी है जो समाज रुपी तालाब में 'वोटर' रूपी मछलियों की तलाश में आँख मूँदकर बैठता है। वे ऐसे नेता को निशाना बनाते हैं जो 'सांप्रदायिक एकता पर अनशन इसलिए नहीं करता क्योंकि वह जिस वार्ड से चुनाव में खडा है वहाँ ज्यादा मुलिम वोट नहीं हैं।' जनता को झूठे वादे कर वोट हासिल करनेवाला स्वार्थी तथा फरेबी नेता उनके 'उसके हम मामा हैं' रचना में देखा गया है। बाढ पीडितों के लिए हमदर्दी दिखाकर उन्हें कंबल बांटने के लिए आनेवाले नेता ने जनता की कितनी सेवा की इस बात पर सवाल उठाया जा सकता है लेकिन बाढ के

आने से नेता के वोट मात्र पके बने। शरद जोशी का यह सक्ष्म निरीक्षण 'नेता' के असली चेहरे को उजागर करता है। वे नेता द्वारा जनता पर अधिकार जताने के लिए भूख, नग्नता तथा गरीबी को बनाए रखने जैसी क्रूर मानसिकता का कडा विरोध करते हैं।

शरद जोशी सत्ता प्राप्ति के हेतु चुनाव में अपनाये गए उन समत असंवैधानिक तत्त्वों की आलोचना करते हैं, जो चुनाव प्रक्रिया के साथ लोकतंत्र की विकृति के कारण बने हैं। नेता की सत्ता लालच ने चुनाव व्यवस्था को खोखला बनाकर जनता के अस्तित्व को महज 'वोट' तक सीमित समझा है। ऐसे में व्यंग्यकार को चुनावी माहौल झूठ का महापर्व तथा असत्य भाषणों का कुंभपर्व लगता है। उन्हें राजनीतिक पार्टी का घोषणापत्र 'झूठ का लिखित दतावेज' लगता है। चुनाव में टिकट के खेल के लिए खेले गए सभी दाँवपेंच वे हमारे सामने रखते हैं। चुनाव में आदर्शवाद की आड में जातिवाद का समर्थन करनेवाले देशविघातक तथा अलगाववादी प्रवृत्तियों का पुरजोर विरोध करते हैं। उन्होंने वोटों की खरीदारी के साथ चुनाव प्रशासन की लापरवाही तथा स्वार्थी प्रवृत्ति की भी आलोचना की है। चुनाव प्रशासन के असली चेहरे का परिचय देते वे लिखते हैं, "एक पत्रकार सुबह आठ बजे अपना वोट डालने गया तब पता चला कि कोई आकर उसका वोट पहले ही डाल चुका था। कई मुर्दों ने भी स्मशान से आकर अपने–अपने वोट के अधिकार को प्राप्त किया।"४ व्यंग्यकार ने आम आदमी की वोट के अधिकार के प्रति लापरवाही को भी निशाना बनाया है। वे अनुभव करते हैं कि नौकरीपरस्त आदमी वोट के दिन सरकारी छुटटी का आनंद लेने हेतु दिनभर सोता रहता है। शरद जोशी एक ओर चुनाव का भयानक तथा क्रूर चेहरा दर्शाते हैं वहीं दूसरी ओर सच्चे व्यंग्यकार का दायित्व निभाते हए इस क्षेत्र की आदर्श स्थिति के संकेत भी देते हैं। इस दृष्टि से उनकी 'जंबूदवीप में चुनाव' रचना विशेष महत्त्वपूर्ण है जिसमें फंतासी शैली का आधार लेकर आदर्श चुनावी माहौल को दर्शाया गया है। स्पष्ट है कि मौजूदा लोकतंत्र से मोहभंग होकर भी वे लोकतांत्रिक मूल्यों पर आस्था तथा विश्वास रखते हैं।

व्यंग्य सत्ता या शासकों के लिए हमेशा खतरा रहा है। व्यंग्यकार अपने आप पर हँसने की क्षमता रखता है। इसी कारण वह अपने समय के नेताओं की चरित्रगत विसंगतियों पर टिप्पणी करने से नहीं रुकता। इस संदर्भ में यह ध्यान में रहे कि तत्कालीन नेताओं पर किया गया व्यंग्य दवेष या आक्षेप न लगकर नेताओं के चरित्र में सुधार की भावना रखता है। इस दृष्टि से शरद जोशी के साहित्य में सबसे ज्यादा प्रतिष्ठा तत्कालीन प्रधानमंत्री 'इंदिरा गांधी' को मिली है। आपातकाल की घोषणा, गरीबी हटाओ का झूठा नारा, काँग्रेस पार्टी पर एकाधिकार सत्ता जैसे विषय व्यंग्य के आलंबन रहे हैं। शरद जोशी ने 'आपातकालीन पंचतंत्र' में पंचतंत्र शैली का आधार लेकर शेर, भेडिया, लोमडी जैसे प्राणियों का आधार लेकर आपातकाल के कारणों तथा परिणामों का विवेचन किया है तथा इंदिरा गांधी की सत्ता लालसा को आपातकाल के लिए जिमेदार ठहराया है। राजीव गांधी की कार्यशैली तथा भारतीय जनजीव के अधकचरे ज्ञान का मखौल 'पानी की समया' रचना में उठाया है। उन्होंने एक ओर मोरारजी देसाई की सत्ता लालच को निशाना बनाया है वहीं दूसरी ओर जनता पार्टी के संस्थापक जयप्रकाश नारायण की विडंबना को उजागर किया है जब जनता पार्टी दवारा सत्ता प्राप्ति के बाद जयप्रकाश को संगठन से दरकिनार कर दिया। शरद जोशी ने राष्ट्रीय नेताओं के साथ मध्यप्रदेश के अधिकतर नेताओं पर व्यक्तिगत व्यंग्य किए हैं। सशत व्यंग्यकार सत्ता को चुनौती देकर खतरा मोल लेता है। आपातकालीन समय में

साहित्यिक क्षेत्र में जहाँ चारों ओर मानसिक गुलामी नजर आ रही थी, ऐसे समय शरद जोशी तत्कालीन राजनेताओं पर वैयक्तिक व्यंग्य करने का खतरा उठाते हैं।

शरद जोशी ने सत्ता में बैठी हर पार्टी की गलत नीतियों को निशाना बनाया है। सन १८८५ में भारत का बौदधिक, सामाजिक तथा राजनीतिक पुनर्गठन करने हेतु स्थापित काँग्रेस यह संगठन आजादी के बाद केवल सत्ता प्राप्ति की लालसा रखनेवाला राजनीतिक पक्ष बनता है तो शरद जोशी इसके नए चरित्र को समत विसंगतियों के साथ हमारे समुख रखते हैं। उन्होंने काँग्रेस को 'कथनी और करनी' में अंतर रखनेवाला 'रुपक' बताया है। अपने 'तीस साल का इतिहास' निबंध में वे काँग्रेस पक्ष के चरित्र को उजागर करते लिखते हैं, "जब तक पक्षपात, निर्णयहीनता, ढीलापन, दोमुँहापन, पूर्वग्रह, ढोंग, दिखावा, सस्ती आकांक्षा और लालच कायम है, इस देश में काँग्रेस को कोई समाप्त नहीं कर सकता।"५ उन्होंने देश में पनपनेवाली भूख, बेकारी तथा भ्रष्टाचार की समस्या के लिए काँग्रेस की गलत नीतियों को जिम्मेदार ठहराया है। सन १९७७ के सत्ता परिवर्तन से वे खुश थे लेकिन उन्होंने नई सरकार की प्रशंसा नहीं की। क्योंकि थोडी ही अवधि में सत्ता लालच के खेल में शुरु हए आपसी संघर्ष से जनता सरकार भी डूब गई। 'संपूर्ण क्रांति' का नारा देकर जनता की सेवा का वादा करके जनता पार्टी ने सरकार तो बना ली पर इस सरकार की सबसे बडी खासियत यह थी कि उसका हर मंत्री एक दूसरे को पछाडकर प्रधानमंत्री बनना चाहता था। यहाँ शरद जोशी सत्ता में बैठी हर पार्टी का असली चेहरा जनता के सामने रखते हैं तथा प्रजातंत्र की विकृति के लिए इनकी नीतियों तथा सत्ता लालच को जिमेदार ठहराते हैं। व्यंग्यकार राष्ट्पति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री के साथ विपक्षी दल की कार्यपद्धति को भी अपने व्यंग्य के दायरे में रखते हैं। उन्होंने विपक्षी दल की अकर्मण्यता, कमजोरी तथा आपसी साँठ–गाँठ की राजनीति को फटकारा है। सरकार की गलत नीतियों का विरोध करने का नाटक करनेवाले विरोधी दल की मिलीभगत पर मार्मिक टिप्पणी करते वे लिखते हैं, "एक ही अखाडे में निरंतर कुश्ती चलती रहे, तो पहलवान धीरे–धीरे दोस्त हो जाते हैं। शुरवात महज औपचारिकता से होती है। हाथ जुडते–मिलते हैं, पर धीरे–धीरे वे एक–दूसरे के बादामों में हिसेदारी करने लगते हैं।"६ स्पष्ट है कि शरद जोशी के साहित्य में सत्ता विरोध तो है ही लेकिन जब वे विपक्ष की अकर्मण्यता देखते हैं तो इसे भी व्यंग्य का आलंबन बनाते हैं।

लेखक वर्तमान को यथार्थवादी दृष्टि से परखता है तथा भविष्य की संभावाओं को अभिव्यक्त करता है। वह अपने समय की घटनाएँ फिर चाहे वह देश में घटी हो या आंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर, केवल गवाह बन इसे देखता नहीं बल्कि इन घटाओं के पीछे छिपी निर्णायक शक्तियों की खोज–बीन भी करता है। शरद जोशी अपने समय के ऐसे ही सशक्त पहरेदार हैं जो राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की विसंगतियों की छान–बीन करते हैं।उनका साहित्य द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के सारे परिणामों जैसे, हथियारों की दौड, एक–दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना, तीसरी दुनिया के देशों की गरीबी, अमरिका की गुंडागर्दी तथा आतंक, भारत–पाक युद्ध तथा दोनों देशों के बीच के तनावपूर्ण संबंध आदि की छानबीन करता तथा इनमें व्याप्त विसंगतियों को अभिव्यक्त करता पाया गया है।

शरद जोशी ने खास तौर पर अमरिका पर बहूत लिखा है। पूँजीवाद के जन्मदाता अमरिका के राष्ट्रीय कार्यक्रम का परिचय देते शरद जोशी लिखते हैं, "किसी को अनाज दो, कहीं सत्ता बदल दो, कहीं डिक्टेटर बिठा दो, कहीं फौजी शासन, किन्हीं दो को आपस में लडवा दो, कहीं जनसंस्था

के टुकडे कर दो, मतलब कुछ करते रहो, इस दुनिया को दो मिनट भी शांत बैठने न दो।"७ अमरिका के इस राष्ट्रीय कार्यक्रम से विश्व के अन्य देश भयभीत हैं। अमरिका अपनी साम्राज्यवादी मानसिकता से किसी भी हद तक जा सकता है। व्यंग्यकार यहाँ अमरिका के दोमुंहापन चरित्र की आलोचना करते हैं। वे पाकितान की भारत विरोधी नीति तथा इस्लाम के नाम पर 'आतंक को बढावा' देने की नीति की आलोचना करते हैं। वर्यें एक पत्रकार होने के कारण वे पाकितान की अंदरुनी हालातों को भी सार्वजनिक करते हैं। व्यंग्यकार को पाकिस्तान के परमाणु हथियारों से ज्यादा 'इलामिक बम की' ज्यादा फिक्र नजर आती है। वे पाकिस्तान के तत्कालीन फौजी शासक याहया की बेहयायी तथा क्रूर चेहरे को दुनिया के सामने रखते हैं। शरद जोशी ने सांप्रदायिक दंगों के परिणामवत्र्प दोनों देशों के हिंदू और मुसलमान धर्मियों की त्रासदी तथा पीडा को वाणी दी है। पाकिस्तान का मुसलमान पाकिस्तान की अंदरुनी हालत को जानता है। उसके लिए हिंदुस्तान या पाकिस्तान बराबर है। कोई एक जगह नहीं जहाँ वह जिंदगी को बेहतर बना सकें। शरद जोशी का यह बयान पाकितान की जनता की बदहाली तथा जीव की त्रासदी अभिव्यक्त हई है।

निष्कर्ष :

१.शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का केंद्रीय विषय 'राजनीति' रहा है। वे प्रत्यक्ष रूप से किसी राजनीतिक विचारधारा का समर्थन नहीं करते। राजनीति से उनकी भूमिका थी – गलत के विरुद्ध विरोध की। उनके लिए राजनीति से जुडना याने मानव जीव को बेहतर बनाने की लडाई से जुडना है। वे राजनीति में मेहनतकश वर्ग का साथ देकर शासकों के खिलाफ खडे रहे।

२.शरद जोशी का समय (१९५२–१९९२) राजनीति की दृष्टि से उथल–पुथल का रहा। इस युग की राजनीति ने स्वातंत्र्योत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों को सर्वाधिक प्रभावित किया। राजनीति का यह क्षेत्र देश का सर्वाधिक रोगग्रत क्षेत्र रहा। शरद जोशी राजनीति के इन बीमार हिसों को मात्र दिखलाते नहीं बल्कि व्यंग्य रूपी अस्त्र से उन हिसों पर प्रहार कर वथ राजनीति की पहल करते हैं।

३.एक सजग पत्रकार तथा सशत व्यंग्यकार होने के नाते शरद जोशी अपनी सूक्ष्म निरिक्षण शक्ति तथा अवलोकन करने की अदभुत शक्ति से भारतीय राजनीति का कोई भी काला हिसा छोडते नहीं हैं। वे समकालीन राजनीति में स्थानीय नेता से अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं तथा विपताओं का सच बडी बेबाकी से अभिव्यत कर उसकी आलोचना करते हैं।

४.शरद जोशी का साहित्य भारतीय राजनीति के अंतर्विरोधों का जीवंत दस्तावेज है। आज की चरम मूल्यहीन राजनीति के अनेकों चित्र तथा महत्त्वपूर्ण घटणाएँ उनके लेखन में कैद हैं। उन्होंने भारतीय राजनीति में व्याप्त उन समत असंगतियों की आलोचना की है जिससे आज का आम आदमी पीडित और ग्रत है।

५.शरद जोशी ने भारतीय राजनीति के अंतर्विरोधों का अनावरण ही नहीं किया बल्कि समकालीन राजनीति के नेताओं तथा पार्टियों का बाकायदा नाम लेकर उनके जनविरोधी कार्यों की निर्भयता के साथ आलोचना की। उनका साहित्य प्रजातंत्र की विकृति के लिए नेता के चरित्र की विसंगतियाँ, चुनाव का खोखलापन, सत्ताधायिरों की नीतिहीनता के साथ विपक्ष की अकर्मण्यता को दोषी ठहराता है।

६.वे गहरे इतिहास बोध से राष्ट्रीय तथा अतर्राष्ट्रीय राजनीति के पटल को बडी यथार्थता से सामान्य आदमी के समक्ष उपस्थित कर उसे राजनीति का आकलन कराते हैं, साथ ही परिवेश के प्रति सजग भी।

७.शरद जोशी ने अपने समय के अन्य व्यंग्यकारों हरिशंकर परसाई, लतीफ घोंघी, श्रीलाल शुल, रवींद्रनाथ त्यागी, शंकर पुणतांबेकर के साथ व्यंग्य को लोकप्रिय तथा साहित्य जगत में समानजनक प्रतिष्ठा दिलाने में योगदान दिया जिसके चलते बीसवीं सदी के अंतिम तीन चार दशक हिंदी लोकोन्मुखी साहित्य में व्यंग्य से ही आच्छन्न रहें।

८.व्यंग्यकार शाश्वत लेखन के पीछे नहीं दौडता। वह चाहता है कि मैं आज जो लिख रहा हूँ कल मिट जाए। यहाँ मिटने से अभिप्राय साहित्य में अभिव्यत विसंगतियाँ तथा विषमताओं से है। लेकिन समाजथ्याप्त विषमताएँ तथा विर्संगतियों में बदलाव नहीं आता, तो वर्तमान राजनीति के अध्ययन के पश्चात हम यही कहेंगे कि शरद जोशी दवारा अभिव्यक्त राजनीतिक विसंगतियाँ आज की राजनीति में हबह तथा व्यापक रूप में मौजूद है। आज की राजनीति तथा नेता का चरित्र भी सत्ता का लालच, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, दलबदल, जनता का शोषक, भाई–भतीजावाद, बयानबाजी से जनता से दिग्भमित करनेवाला ही है। इससे स्पष्ट है कि शरद जोशी द्वारा अभिव्यक्त राजनीतिक व्यंग्य आजाद भारत के ६७ वर्षो का सच्चा दस्तावेज तथा इतिहास ही है।

संदर्भ,आधारभूत ग्रंथ सूची :

१. सं. शशि मिश्र, शरद जोशी : एक यात्रा, शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य, नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन : प्रथम संकरण, १९९३, पृ. ७६.

२. शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ : छठा संकरण, २००४, पृ. ०८.

३. वही.

४. शरद जोशी, वोट ले दरिया में डाल, बिहार पहँचकर नरभसा गए शरद जोशी, नई दिल्ली, राजपाल अँड सन्स :प्रथम संकरण २०१०, पृ. ५५.

५. शरद जोशी, जादू की सरकार, तीस साल का इतिहास, दिल्ली, राजपाल अँड सन्स : संकरण २०११, पृ. ४३.

६. शरद जोशी, यथासंभव, जैसे श्वान काँच मंदिर में, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन : ग्यारहवाँ संकरण २००६, पृ. २०.

७. शरद जोशी, यथासमय, बडा देश, बडा झूठ, दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ : चौथा संकरण, २०११, पृ. २५२.